

NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 19-03-2026

विषय सूची

भारत का जनसांख्यिकीय संक्रमण: लाभांश से वृद्धावस्था की चुनौती तक

युद्ध में नैतिकता

बाल मृत्यु दर के स्तर और प्रवृत्तियाँ

भारत का विद्युत क्षेत्र: प्रगति और सुधार

राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस

संक्षिप्त समाचार

एडिपोज़ ऊतक

उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO)

पीएम पोषण योजना

भारत औद्योगिक विकास योजना (BHAVYA)

मीथेन उत्सर्जन

प्राचीन पर्वत श्रृंखला

जापानी चुम सैल्मन

भारत का जनसांख्यिकीय संक्रमण: लाभांश से वृद्धावस्था की चुनौती तक

संदर्भ

- हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट “भारत का जनसांख्यिकीय भविष्य: राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए जनसंख्या प्रक्षेपण 2021–2051” यह रेखांकित करती है कि भारत एक संरचनात्मक जनसांख्यिकीय संक्रमण का सामना कर रहा है, जिसका शासन, अर्थव्यवस्था और सामाजिक क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

भारत में प्रमुख जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ

- घटती प्रजनन दर:** भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) लगभग प्रतिस्थापन स्तर 2.1 तक घट गई है, जो जनसंख्या स्थिरीकरण की ओर संकेत करती है।
- धीमी जनसंख्या वृद्धि:** भारत की जनसंख्या 2021 में लगभग 1.35 अरब से बढ़कर 2051 तक 1.59 अरब होने की संभावना है, जो स्थिर किंतु धीमी वृद्धि को दर्शाता है।
- क्षेत्रीय असमानताएँ:** दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों में प्रतिस्थापन स्तर से नीचे की प्रजनन दर दर्ज हो चुकी है, जिससे शीघ्र वृद्धावस्था की स्थिति उत्पन्न हो रही है। वहीं उत्तरी और पूर्वी राज्यों में अपेक्षाकृत उच्च प्रजनन दर बनी हुई है, जो जनसंख्या वृद्धि को बनाए रखती है।
 - यह क्षेत्रीय असंतुलन श्रम वितरण, प्रवासन और राज्य-स्तरीय वित्तीय नियोजन में चुनौतियाँ उत्पन्न करता है।

भारत के जनसांख्यिकीय परिवर्तन के परिणाम

- देखभाल अर्थव्यवस्था का उदय:** घटते परिवार आकार और परमाणु परिवारों की वृद्धि से वृद्धजनों की देखभाल का भार कम व्यक्तियों पर बढ़ रहा है।
 - इससे औपचारिक देखभाल अर्थव्यवस्था का विकास आवश्यक हो जाता है, जिसमें जेरियाट्रिक सेवाएँ, सहायक आवास और घरेलू देखभाल शामिल हैं।

- नई माँगों के साथ शहरीकरण:** तीव्र शहरीकरण से आवास, अवसंरचना और रोजगार अवसरों की माँग बढ़ेगी।
 - शहरों को युवा कार्यबल और वृद्ध जनसंख्या दोनों की आवश्यकताओं को समावेशी एवं सुलभ योजना के माध्यम से पूरा करना होगा।
- उपभोक्ता माँग में परिवर्तन:** आयु संरचना में बदलाव से उपभोग पैटर्न युवाओं पर केंद्रित होने से विविधीकृत संरचना की ओर बढ़ेगा।
 - स्वास्थ्य सेवा, बीमा, सेवानिवृत्ति योजना और वृद्धजन-अनुकूल सेवाओं की माँग बढ़ेगी, जिससे *सिल्वर इकॉनमी* के अवसर उत्पन्न होंगे।

जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने हेतु प्रमुख पहलें

- स्किल इंडिया मिशन:** उद्योग-संबंधी कौशलों में लाखों युवाओं को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य, जिससे रोजगार-योग्यता बढ़े और कौशल अंतराल कम हो।
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY):** अल्पकालिक कौशल प्रशिक्षण और प्रमाणन, उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप, तथा पूर्व अधिगम की मान्यता (RPL) को प्रोत्साहन।
- आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना:** स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान करती है और स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करती है।
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना:** मातृत्व लाभ प्रदान कर महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण को समर्थन देती है।
 - महिला श्रमबल की भागीदारी बढ़ाना जनसांख्यिकीय लाभांश का पूर्ण उपयोग करने की कुंजी है।
- श्रम संहिता 2020:** 29 केंद्रीय श्रम कानूनों को चार संहिताओं में समेकित कर व्यापार सुगमता बढ़ाने, श्रमिक संरक्षण सुदृढ़ करने और औपचारिक रोजगार को प्रोत्साहित करने का लक्ष्य।
 - इसमें गिग/प्लेटफॉर्म श्रमिकों तक सामाजिक सुरक्षा का विस्तार भी शामिल है।

आगे की राह

- **कौशल और शिक्षा सुधार:** भारत को नामांकन-आधारित शिक्षा से परिणाम-उन्मुख और कौशल-आधारित अधिगम की ओर बढ़ना होगा, जो उद्योग की आवश्यकताओं से सामंजस्यशील हो।
 - डिजिटल कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण और आजीवन अधिगम पर विशेष बल देना चाहिए।
- **स्वास्थ्य सेवा और दीर्घायु तकनीक:** स्वस्थ जनसंख्या उत्पादकता और आर्थिक वृद्धि में प्रत्यक्ष योगदान देती है। वृद्धजन देखभाल, निवारक स्वास्थ्य सेवा और स्वास्थ्य-तकनीकी नवाचारों का विस्तार आवश्यक है।
- **क्षेत्रीय असमानताओं का समाधान:** युवा जनसंख्या वाले राज्यों में श्रम-प्रधान उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे प्रवासन दबाव कम हो और संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित हो।
- **शहरी नियोजन:** उत्पादकता, समावेशिता और स्थिरता को एकीकृत करना आवश्यक है। छोटे शहरों का विकास महानगरों पर दबाव कम कर संतुलित वृद्धि को समर्थन देगा।

निष्कर्षात्मक टिप्पणी

- भारत का जनसांख्यिकीय संक्रमण एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जहाँ केवल जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विस्तार को आगे नहीं बढ़ा सकती।
- देश को मानव पूँजी, तकनीक और संस्थागत क्षमता में निवेश कर उत्पादकता-आधारित विकास मॉडल की ओर सक्रिय रूप से बढ़ना होगा।
- यदि प्रभावी ढंग से प्रबंधन किया जाए, तो वृद्धावस्था *सिल्वर इकॉनमी* के माध्यम से अवसर में परिवर्तित हो सकती है, जिससे भारत सतत और समावेशी विकास प्राप्त कर *मिडल-इनकम ट्रैप* से बच सकता है।

Source: TH

युद्ध में नैतिकता

संदर्भ

- ईरान ने संयुक्त राज्य अमेरिका और इजराइल पर युद्ध के पहले दिन ईरान के दक्षिण में स्थित विद्यालय पर घातक मिसाइल हमला करने का आरोप लगाया है।

युद्ध में नैतिकता

- वॉरफेयर में नैतिकता एक जटिल विषय है, जो यह जांचता है कि क्या सशस्त्र संघर्ष के दौरान नैतिक सिद्धांत अस्तित्व में रह सकते हैं और उन्हें आचरण को किस प्रकार निर्देशित करना चाहिए।
- **न्यायसंगत युद्ध सिद्धांत:** न्यायसंगत युद्ध के सिद्धांतों की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीक और रोमन दार्शनिकों जैसे प्लेटो एवं सिसरो से हुई और बाद में ईसाई धर्मशास्त्रियों जैसे ऑगस्टीन तथा थॉमस एक्विनास ने इसे विस्तार दिया।
 - यह युद्ध की नैतिकता का आकलन करने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है।
 - यह बताता है कि युद्ध केवल कुछ कठोर शर्तों के अंतर्गत ही नैतिक रूप से उचित ठहराया जा सकता है।
 - इसे तीन घटकों में विभाजित किया गया है:
 - **जुस ऐड बेल्लम:** युद्ध में जाने के औचित्य से संबंधित है, जैसे आत्मरक्षा, वैध प्राधिकरण और अंतिम विकल्प।
 - **जुस इन बेल्लो:** युद्ध के दौरान आचरण को नियंत्रित करता है, जिसमें नागरिकों को निशाना न बनाने और बल का अनुपातिक प्रयोग करने पर बल दिया जाता है।
 - **जुस पोस्ट बेल्लम:** युद्ध के बाद न्याय पर केंद्रित है, जिसमें निष्पक्ष शांति समझौते और पुनर्निर्माण शामिल हैं।

युद्ध में प्रमुख नैतिक मुद्दे

- **नागरिकों की सुरक्षा:** नागरिक हताहत आधुनिक युद्ध में सबसे गंभीर नैतिक चिंताओं में से एक है।
 - कानूनी सुरक्षा उपायों के बावजूद, बमबारी और सैन्य अभियानों से प्रायः गैर-युद्धरत व्यक्तियों को अनपेक्षित हानि होती है।
- **जनसंहारक हथियारों का प्रयोग:** अत्यधिक विनाशकारी हथियारों का उपयोग गंभीर नैतिक प्रश्न उठाता है।
 - उदाहरणस्वरूप, हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बमबारी आज भी आवश्यकता बनाम मानवीय परिणामों के संदर्भ में परिचर्चा का विषय है।

- **कैदियों का व्यवहार और यातना:** नैतिक मानदंड यातना और अमानवीय व्यवहार का सख्त विरोध करते हैं। युद्धबंदी अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत गरिमा और संरक्षण के अधिकारी हैं।
- **पूर्व-निवारक और निवारक युद्ध:** पूर्व-निवारक युद्ध आसन्न खतरे की स्थिति में उचित ठहराया जा सकता है, जबकि निवारक युद्ध अधिक विवादास्पद है क्योंकि यह संभावित भविष्य के जोखिमों पर आधारित होता है।

युद्ध की नैतिकता पर प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण

- **अहिंसा (Pacifism):** अहिंसा का मानना है कि युद्ध स्वभावतः अनैतिक है और प्रत्येक परिस्थिति में इससे बचना चाहिए। महात्मा गांधी जैसे विचारकों ने अहिंसा और शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान का समर्थन किया।
- **यथार्थवाद (Realism):** यथार्थवाद का तर्क है कि राज्य नैतिक विचारों की तुलना में राष्ट्रीय हित और अस्तित्व को प्राथमिकता देते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में नैतिक सिद्धांतों की सीमित प्रासंगिकता है।

अंतर्राष्ट्रीय कानून की भूमिका

- अंतर्राष्ट्रीय कानून केवल आत्मरक्षा के मामलों में या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा अधिकृत होने पर बल प्रयोग की अनुमति देता है।
- **जेनेवा संधियाँ (1949):** ये सशस्त्र संघर्ष में मानवीय कानून की रीढ़ हैं।
 - भूमि और समुद्र पर घायल एवं बीमार सैनिकों की रक्षा करती हैं।
 - युद्धबंदियों के मानवीय व्यवहार को सुनिश्चित करती हैं।
 - संघर्ष क्षेत्रों में नागरिकों के लिए सुरक्षा प्रदान करती हैं।
 - हिंसा, यातना और अपमानजनक व्यवहार को प्रतिबंधित करती हैं।
- **अतिरिक्त प्रोटोकॉल (1977 और 2005):** ये प्रोटोकॉल विशेष रूप से गृहयुद्धों और आधुनिक संघर्षों में सुरक्षा का विस्तार करते हैं।

- नागरिकों और युद्धरतों के बीच भेदभाव के सिद्धांत को सुदृढ़ करते हैं।
- युद्ध की विधियों और नागरिक अवसंरचना की सुरक्षा को विनियमित करते हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय जैसी संस्थाएँ युद्ध अपराधों और मानवता के विरुद्ध अपराधों का अभियोजन कर जवाबदेही सुनिश्चित करती हैं।

निष्कर्ष

- युद्ध में नैतिकता सैन्य आवश्यकता और मानवीय विचारों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।
- यद्यपि युद्ध कभी-कभी अपरिहार्य हो सकता है, नैतिक ढाँचे और अंतर्राष्ट्रीय कानून हिंसा को सीमित करने, नागरिकों की रक्षा करने तथा मानव गरिमा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Source: NDTV

बाल मृत्यु दर के स्तर और प्रवृत्तियाँ

संदर्भ

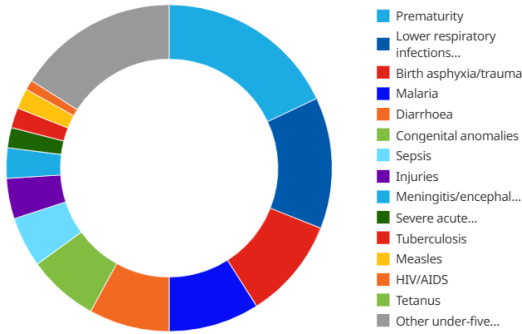
संयुक्त राष्ट्र इंटर-एजेंसी ग्रुप फॉर चाइल्ड मॉर्टैलिटी एस्टीमेशन (UNIGME) की रिपोर्ट 2025 हाल ही में जारी की गई।

मुख्य विशेषताएँ

- **बाल मृत्यु दर:** वर्ष 2024 में अनुमानित 4.9 मिलियन बच्चों की मृत्यु पाँच वर्ष की आयु पूरी करने से पहले हुई, जिनमें 2.3 मिलियन नवजात शामिल थे।
 - नवजात मृत्यु कुल पाँच वर्ष से कम आयु की मृत्यु का लगभग आधा हिस्सा है, जो जन्म के समय के आसपास मृत्यु रोकने में धीमी प्रगति को दर्शाता है।
 - इनमें से अधिकांश मृत्यु सिद्ध, कम लागत वाले हस्तक्षेपों और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच से रोकी जा सकती थीं।
- **बाल मृत्यु के कारण:**
 - नवजातों में मृत्यु का प्रमुख कारण समय से पूर्व जन्म, प्रसव के दौरान जटिलताएँ और नवजात संक्रमण हैं।
 - 1-59 माह आयु के बच्चों में निमोनिया, दस्त और मलेरिया प्रमुख घातक रोग हैं, जिन्हें कुपोषण गंभीर बनाता है।

- प्रथम बार रिपोर्ट ने गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM) से सीधे होने वाली मृत्यु का अनुमान लगाया है, जिसमें 2024 में 1-59 माह आयु के 100,000 से अधिक बच्चों की मृत्यु हुई।

Cause of death distribution for under-five deaths, World (2024)



- अब तक की प्रगति: 1990 से पाँच वर्ष से कम आयु की मृत्यु दर लगभग 60% और नवजात मृत्यु दर 45% घटी है।
- 2000 से वैश्विक स्तर पर पाँच वर्ष से कम आयु की मृत्यु दर आधे से अधिक कम हुई है, किंतु 2015 से बाल मृत्यु दर में कमी की गति 60% से अधिक धीमी हो गई है।
- वर्तमान दर के अनुसार 2025 से 2030 के बीच 27.3 मिलियन पाँच वर्ष से कम आयु की मृत्यु होने का अनुमान है।
- ये मृत्यु मुख्यतः उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में केंद्रित हैं।
- भारत-विशेष निष्कर्ष: भारत उन देशों में है जो सतत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों के माध्यम से बाल मृत्यु दर कम करने में स्थिर प्रगति दिखा रहे हैं।
 - 1990 में भारत की नवजात मृत्यु दर (NMR) 1,000 जीवित जन्मों पर 57 थी, जो 2024 में घटकर 17 हो गई।
 - 1990 में पाँच वर्ष से कम आयु की मृत्यु दर (U5MR) 1,000 जीवित जन्मों पर 127 थी, जो 2024 में घटकर 27 हो गई।
 - यह तीव्र कमी लक्षित सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों, बेहतर संस्थागत प्रसव प्रणाली और विस्तारित टीकाकरण कवरेज के कारण संभव हुई।

- सिफारिशें: उच्च-भार वाले देशों से राजनीतिक प्रतिबद्धता, घरेलू संसाधनों का संकलन और सभी के लिए सुलभ, प्रमाण-आधारित गुणवत्तापूर्ण सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करना।
 - उच्च जोखिम वाले समूहों पर ध्यान केंद्रित करना, विशेषकर उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया की माताओं और बच्चों पर, तथा संघर्ष एवं संवेदनशील परिस्थितियों में।
 - मातृ, नवजात और बाल मृत्यु दर कम करने की वर्तमान प्रतिबद्धताओं के लिए जवाबदेही को सुदृढ़ करना।
 - प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में निवेश करना ताकि बच्चों में मृत्यु के प्रमुख कारणों की रोकथाम, निदान और उपचार किया जा सके।

संयुक्त राष्ट्र इंटर-एजेंसी ग्रुप फॉर चाइल्ड मॉर्टैलिटी एस्टीमेशन (UNIGME)

- इसका गठन 2004 में बाल मृत्यु दर पर डेटा साझा करने, अनुमान विधियों में सुधार करने और बाल जीवित रहने के लक्ष्यों की प्रगति पर रिपोर्ट करने के लिए किया गया।
- इसका नेतृत्व यूनिसेफ करता है और इसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), विश्व बैंक समूह तथा संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या प्रभाग (आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के विभाग) पूर्ण सदस्य हैं।

भारत में बाल मृत्यु दर कम करने हेतु सरकारी पहलें

- जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (JSSK): सभी गर्भवती महिलाओं और बीमार शिशुओं (एक वर्ष तक) को सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में निःशुल्क प्रसव (सीज़ेरियन सहित) का अधिकार। इसमें निःशुल्क दवाएँ, आहार, जाँच, परिवहन एवं आवश्यकता पड़ने पर रक्त आधान शामिल है।
- प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (PMSMA): गर्भवती महिलाओं को प्रत्येक माह की 9 तारीख को विशेषज्ञ/चिकित्सक द्वारा निःशुल्क, गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व जाँच उपलब्ध कराता है।

- ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण दिवस (VHSNDs): मातृ एवं बाल स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और जागरूकता हेतु आयोजित।
- प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (RCH) पोर्टल: गर्भवती महिलाओं और नवजातों की वेब-आधारित ट्रेकिंग प्रणाली, जिससे नियमित और पूर्ण सेवाओं की सुनिश्चितता होती है।
- मदर एंड चाइल्ड प्रोटेक्शन (MCP) कार्ड एवं सुरक्षित मातृत्व पुस्तिका: गर्भवती महिलाओं को आहार, विश्राम, गर्भावस्था के खतरे के संकेत, लाभकारी योजनाएँ और संस्थागत प्रसव की जानकारी देने हेतु वितरित।
- मिशन इंद्रधनुष (2014): 90% से अधिक पूर्ण टीकाकरण कवरेज प्राप्त करने का लक्ष्य। कठिन पहुँच वाले समूहों पर विशेष ध्यान।
 - पूर्ण टीकाकरण कवरेज 2015 में 62% से बढ़कर 2026 में 98.4% हो गया।
- राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK): 0 से 18 वर्ष आयु के बच्चों की 32 स्वास्थ्य स्थितियों (रोग, कमी, दोष और विकासात्मक विलंब) की जाँच।
- पोषण पुनर्वास केंद्र (NRCs): गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM) और चिकित्सीय जटिलताओं वाले बच्चों के उपचार हेतु सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में स्थापित।

क्या आप जानते हैं?

- भारत ने टीकाकरण के माध्यम से चेचक, पोलियो और मातृ एवं नवजात टिटनेस का उन्मूलन किया है तथा अपने टीकाकरण कार्यक्रम का विस्तार जारी रखा है — हाल ही में 2026 में HPV एवं स्वदेशी Td टीके शुरू किए गए।
- यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन प्रोग्राम (UIP) विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण कार्यक्रमों में से एक है, जो प्रत्येक वर्ष 2.9 करोड़ गर्भवती महिलाओं और 2.54 करोड़ नवजातों तक निःशुल्क पहुँचता है।

Source: TH

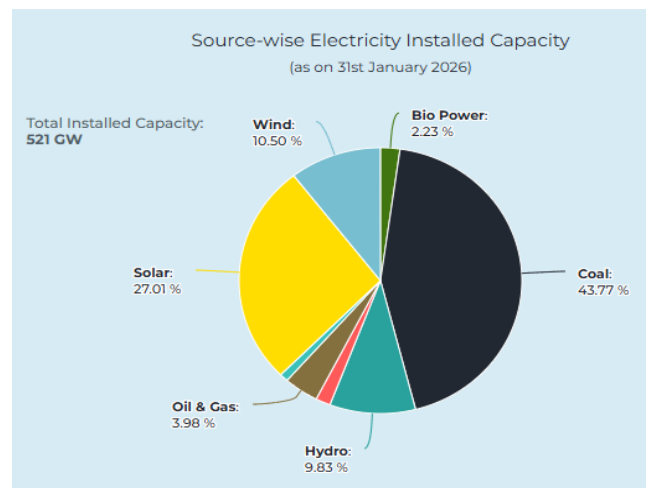
भारत का विद्युत क्षेत्र: प्रगति और सुधार

संदर्भ

- भारत का विद्युत क्षेत्र विगत दशक में सतत निवेश, नीतिगत सुधारों और संस्थागत सुदृढीकरण के कारण घाटा-प्रधान प्रणाली से एक अधिक विश्वसनीय एवं क्षमता-संपन्न प्रणाली में परिवर्तित हुआ है।

विद्युत क्षेत्र की प्रमुख उपलब्धियाँ

- जनवरी 2026 तक भारत की स्थापित विद्युत क्षमता 520.51 गीगावाट तक पहुँच गई, जबकि FY14 में 4.2% की विद्युत कमी घटकर दिसंबर 2025 तक मात्र 0.03% रह गई।
- 2024–25 में प्रति व्यक्ति विद्युत खपत बढ़कर 1,460 किलोवाट-घंटा हो गई, जो ऊर्जा पहुँच और आर्थिक गतिविधि में वृद्धि को दर्शाती है।
- वितरण कंपनियों (DISCOMs) ने FY25 में ₹2,701 करोड़ का लाभ दर्ज किया, जिससे पूर्व के वित्तीय घाटे परिवर्तित हो गए।
- तकनीकी और वाणिज्यिक हानियाँ (AT&C), जो तकनीकी अक्षमताओं एवं वाणिज्यिक रिसाव के कारण ऊर्जा हानि को दर्शाती हैं, FY14 में 22.62% से घटकर FY25 में 15.04% हो गईं।



नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण

- नवंबर 2025 तक भारत की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 253.96 गीगावाट तक पहुँच गई, जो 2024 की 205.52 गीगावाट से 23% से अधिक की वृद्धि है।

- सौर ऊर्जा क्षमता 132.85 गीगावाट तक पहुँची, इसके बाद पवन ऊर्जा लगभग 53.99 गीगावाट रही।
- **भारत की वैश्विक स्थिति:**
 - सौर ऊर्जा स्थापित क्षमता में विश्व में तीसरे स्थान पर।
 - पवन ऊर्जा स्थापित क्षमता में चौथे स्थान पर।
 - कुल नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता में विश्व में चौथे स्थान पर।
- नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में अग्रणी राज्य: राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक।
- भारत का लक्ष्य 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता प्राप्त करना है।

विद्युत क्षेत्र की वृद्धि हेतु सरकारी पहलें

- **दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY):** ग्रामीण विद्युतीकरण और फीडर पृथक्करण को सुदृढ़ किया।
- **एकीकृत विद्युत विकास योजना (IPDS):** शहरी वितरण अवसंरचना और आईटी-सक्षम प्रणालियों में सुधार।
- **प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य):** अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी के माध्यम से सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण सुनिश्चित किया।
- **पुनर्गठित वितरण क्षेत्र योजना (RDSS):** ₹3.03 लाख करोड़ के प्रावधान के साथ DISCOMs की दक्षता और वित्तीय स्थिरता में सुधार का लक्ष्य।

नीतिगत और विनियामक सुधार

- **विद्युत (विलंबित भुगतान अधिभार और संबंधित मामले) नियम, 2022:** बकाया देयों के निपटान हेतु संरचित और समयबद्ध तंत्र स्थापित कर DISCOMs की नकदी प्रवाह समस्याओं का समाधान।
- **विद्युत (संशोधन) विधेयक, 2026:** लागत-परावर्तक शुल्क को बढ़ावा देना, क्रॉस-सब्सिडी का युक्तिकरण और बाजार-आधारित विद्युत खरीद को सक्षम करना।
- **राष्ट्रीय विद्युत योजना (2023–2032):** 2032 तक अनुमानित 458 गीगावाट की चरम माँग को पूरा करने हेतु बड़े पैमाने पर निवेश का रोडमैप।

चुनौतियाँ

- **DISCOMs में वित्तीय दबाव:** राज्य सरकारों द्वारा कृषि और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए उच्च सब्सिडी भार के कारण वितरण कंपनियाँ वित्तीय तनाव का सामना करती हैं।
 - परिचालन अक्षमताएँ जैसे विद्युत चोरी, खराब बिलिंग और कम वसूली दक्षता हानियों को और बढ़ाती हैं।
 - कमजोर वित्तीय स्थिति उनके लिए अवसंरचना में निवेश, समय पर जनरेटरों को भुगतान और विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित करने की क्षमता को प्रभावित करती है।
- **कोयले पर उच्च निर्भरता:** नवीकरणीय ऊर्जा की वृद्धि के बावजूद, भारत में विद्युत उत्पादन का प्रमुख स्रोत कोयला है। इससे उच्च कार्बन उत्सर्जन, वायु प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षरण होता है, जो जलवायु प्रतिबद्धताओं को प्रभावित करता है।
- **अनियमित नवीकरणीय ऊर्जा:** नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत स्वभावतः अनियमित हैं और उनकी परिवर्तनशीलता ग्रिड स्थिरता बनाए रखने और माँग-आपूर्ति संतुलन में चुनौतियाँ उत्पन्न करती है।
- **शुल्क युक्तिकरण की आवश्यकता:** भारत में विद्युत शुल्क लागत-परावर्तक नहीं हैं, क्योंकि उच्च भुगतान करने वाले औद्योगिक उपभोक्ता कृषि और घरेलू उपभोक्ताओं को सब्सिडी देते हैं।
 - यह क्रॉस-सब्सिडी संरचना मूल्य निर्धारण को विकृत करती है और उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करती है।

आगे की राह

- स्मार्ट मीटरिंग और डिजिटल बिलिंग प्रणालियों का तीव्र विस्तार AT&C हानियों को कम करेगा, बिलिंग दक्षता में सुधार करेगा तथा पारदर्शिता बढ़ाएगा।
- ग्रिड अवसंरचना को सुदृढ़ करना, जिसमें ट्रांसमिशन कॉरिडोर और लचीली उत्पादन क्षमता शामिल है, बढ़ती माँग एवं नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण के प्रबंधन हेतु महत्वपूर्ण है।

- लक्षित प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के साथ लागत-परावर्तक शुल्क को बढ़ावा देना क्रॉस-सब्सिडी को कम करेगा और कमजोर उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा।

Source: PIB

राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस

संदर्भ

- भारत ने राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (16 मार्च) मनाया, ताकि टीकाकरण में हुई उपलब्धियों को उजागर किया जा सके। यह दिवस 1995 में पल्स पोलियो कार्यक्रम के अंतर्गत दी गई ओरल पोलियो वैक्सीन की प्रथम खुराक की स्मृति में मनाया जाता है।

परिचय

- टीकाकरण ने भारत में जनस्वास्थ्य सुधारने में परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। देश ने चेचक (1977) का उन्मूलन किया, पोलियो (2011 का अंतिम मामला), यॉज तथा मातृ एवं नवजात टिटनेस को समाप्त किया।
- इससे बाल मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई और खसरा-रूबेला तथा क्षय रोग जैसी बीमारियों का भार घटा।
- COVID-19 के दौरान भारत “विश्व की फार्मसी” के रूप में उभरा, जहाँ 200 करोड़ से अधिक टीके लगाए गए और वैश्विक स्तर पर आपूर्ति की गई। उल्लेखनीय है कि भारत वैश्विक टीका उत्पादन में लगभग 60% योगदान देता है।

Why Is Vaccination Important?

- Protection Before Exposure**
Simple, safe & effective – protects you before you encounter harmful diseases
- Trains Your Immune System**
Builds antibodies against diseases without causing illness
- Long-Lasting Immunity**
Protection that lasts years, decades – or even a lifetime
- Saves Lives Every Year**
Childhood vaccines alone prevent millions of deaths annually
- Protects the Vulnerable**
Shields babies, the elderly & immune compromised who cannot be vaccinated
- Prevents Diseases**
Including Polio, Measles, Tetanus, Typhoid, Hepatitis B & Cervical Cancer
- Safe for Nearly Everyone**
All ingredients thoroughly tested, monitored & approved

HOW THE IMMUNE SYSTEM AND VACCINES WORK

NATURAL INFECTION & IMMUNE RESPONSE

- A Person Falls Ill**
A person encounters pathogens and falls ill.
PATHOGENS: bacteria, virus, parasites, fungi
- Immune System Action**
Immune system identifies pathogens and creates antibodies (like specialised soldiers).
ANTIBODIES
- Defeating Germs & Memory**
The antibodies help the person fight the illness; the immune system retains a 'memory' of the germ for future defenses.
MEMORY CELLS

HOW VACCINES ASSIST THE PROCESS

- Vaccination**
Vaccines help produce antibodies without the person falling ill first.
- Vaccine Components**
WEAKENED/INACTIVE GERM ORGANISM (ANTIGENS), GENETIC BLUEPRINT
Components cannot cause disease.
- Provoking Defences**
ANTIBODIES, MEMORY CELLS
Effectively provoke the immune system to create necessary defences.

FUTURE ENCOUNTER WITH REAL PATHOGEN

The body is protected.
If the real pathogen is encountered, memory cells allow the body to defend itself much more efficiently.

परिणाम

- पोषण, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के साथ टीकाकरण ने भारत में मातृ एवं शिशु जीवित रहने की दर को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया।
- पूर्ण टीकाकरण कवरेज 2015 में 62% से बढ़कर जनवरी 2026 में 98.4% हो गया।
- जीरो-डोज बच्चों का प्रतिशत 2023 में 0.11% से घटकर 2024 में 0.06% हो गया।
- प्रतिवर्ष 1.3 करोड़ से अधिक टीकाकरण सत्र आयोजित किए जाते हैं।
- भारत को बड़े पैमाने पर जनस्वास्थ्य वितरण के लिए वैश्विक स्तर पर एक आदर्श मॉडल के रूप में मान्यता मिली है।

सरकारी पहलें

- **सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (UIP):** 1985 में शुरू किया गया, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा संचालित। इसका उद्देश्य बच्चों और गर्भवती महिलाओं को विभिन्न बीमारियों के विरुद्ध निःशुल्क टीके उपलब्ध कराना है। यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष लगभग 2.9 करोड़ गर्भवती महिलाओं एवं 2.54 करोड़ नवजातों तक पहुँचता है।
- **मिशन इन्द्रधनुष (2014):** उन बच्चों और गर्भवती महिलाओं तक पहुँचने के लिए शुरू किया गया जो टीकाकरण से वंचित या आंशिक रूप से टीकाकृत हैं।
- **हाल की पहलें (2026)**
 - **HPV टीकाकरण अभियान:** लगभग 1.15 करोड़ 14 वर्षीय लड़कियों को गर्भाशय ग्रीवा कैंसर की रोकथाम हेतु लक्षित।
 - **स्वदेशी Td वैक्सीन:** सीआरआई, कसौली में निर्मित; ~55 लाख खुराक आपूर्ति हेतु नियोजित।
- **डिजिटल पहलें:**
 - **eVIN:** वास्तविक समय में टीका भंडार और तापमान की निगरानी।
 - **U-Win:** डिजिटल टीकाकरण रजिस्ट्री और ट्रेकिंग प्लेटफॉर्म।

- **CoWIN:** 220+ करोड़ COVID टीका खुराक प्रशासन में सक्षम।

चुनौतियाँ

- **टीका संकोच और भ्रांतियाँ:** उच्च कवरेज के बावजूद कुछ क्षेत्रों में गलत जानकारी और सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण प्रतिरोध बना हुआ है, जिससे जीरो-डोज बच्चों की उपस्थिति (2024 में ~0.06%) बनी रहती है।
- **अंतिम छोर तक वितरण की कमी:** दूरस्थ, आदिवासी और संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँचना कठिन है, यद्यपि भारत UIP के अंतर्गत प्रतिवर्ष 1.3 करोड़ से अधिक टीकाकरण सत्र आयोजित करता है।
- **कोल्ड चेन रखरखाव की समस्या:** भारत लगभग 30,000 कोल्ड चेन पॉइंट्स और 1.06 लाख उपकरण इकाइयों के साथ विश्व की सबसे बड़ी टीका कोल्ड चेन प्रणालियों में से एक संचालित करता है। कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में तापमान बनाए रखना एक बड़ी लॉजिस्टिक चुनौती है।
- **शहरी झुग्गियों में कवरेज की कमी:** उच्च जनसंख्या गतिशीलता और अनौपचारिक बस्तियों के कारण कई बच्चे टीकाकरण से वंचित या आंशिक रूप से टीकाकृत रह जाते हैं, जिससे सार्वभौमिक कवरेज प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

Source: PIB

संक्षिप्त समाचार

एडिपोज़ ऊतक

संदर्भ

- हालिया वैज्ञानिक शोध ने यह स्पष्ट किया है कि एडिपोज़ ऊतक (वसा) केवल अतिरिक्त कैलोरी का निष्क्रिय भंडारण स्थल नहीं है, बल्कि एक सक्रिय चयापचयी और अंतःस्रावी अंग है।

वसा (एडिपोज़ ऊतक) क्या है?

- एडिपोज़ ऊतक एक विशेष संयोजी ऊतक है, जो अतिरिक्त ऊर्जा को वसा के रूप में संग्रहीत करता है,

हार्मोन स्राव के माध्यम से चयापचय को नियंत्रित करता है तथा महत्वपूर्ण अंगों की सुरक्षा और इन्सुलेशन प्रदान करता है।

- यह एक अंतःस्रावी अंग के रूप में कार्य करता है और निम्नलिखित हार्मोन स्रावित करता है:
 - **लेप्टिन (Leptin):** भूख और ऊर्जा संतुलन को नियंत्रित करता है।
 - **एडिपोनेक्टिन (Adiponectin):** इंसुलिन संवेदनशीलता को बढ़ाता है।

वसा (एडिपोज़ ऊतक) के प्रकार

- **श्वेत एडिपोज़ ऊतक (WAT):** वयस्कों में सबसे अधिक पाया जाने वाला वसा। इसके कार्य हैं:
 - ऊर्जा को ट्राइग्लिसराइड्स के रूप में संग्रहीत करना
 - ऊर्जा की कमी के समय चयापचयी भंडार के रूप में कार्य करना
 - इन्सुलेशन और यांत्रिक सुरक्षा प्रदान करना
 - चयापचय नियंत्रित करने वाले हार्मोन स्रावित करना
- **भूरा एडिपोज़ ऊतक (BAT):** विशेष वसा जो ऊर्जा जलाकर ऊष्मा उत्पन्न करता है (थर्मोजेनेसिस)। यह माइटोकॉन्ड्रिया से समृद्ध होता है और *अनकपलिंग प्रोटीन-1 (UCP1)* युक्त होता है।
- **बेज एडिपोज़ ऊतक (BeAT):** यह थर्मोजेनिक “भूरे जैसा” वसा है, जो श्वेत एडिपोज़ ऊतक (WAT) में ठंड के संपर्क या एंड्रेनर्जिक उत्तेजना के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। इस प्रक्रिया को “ब्राउनिंग” कहा जाता है।

स्रोत: TH

उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO)

संदर्भ

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने चेतावनी दी है कि यदि सहयोगी देश *हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य* की सुरक्षा में सहायता नहीं करते, तो अमेरिका *नाटो* से बाहर निकल सकता है।

नाटो के बारे में

- **स्थापना:** 1949 में *उत्तर अटलांटिक संधि* (वॉशिंगटन संधि) पर हस्ताक्षर के साथ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक सैन्य गठबंधन के रूप में स्थापित।
- **उद्देश्य:** सदस्य देशों की सुरक्षा और रक्षा सुनिश्चित करना, सामूहिक रक्षा के सिद्धांत के माध्यम से।
- **सामूहिक रक्षा:** नाटो का आधार *अनुच्छेद 5* है, जिसके अनुसार किसी एक या अधिक सदस्य पर सशस्त्र हमला सभी पर हमला माना जाएगा।
- **सदस्य:**
 - **संस्थापक सदस्य:** बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, नॉर्वे, पुर्तगाल, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका।
 - **वर्तमान सदस्य संख्या:** 32 (फिनलैंड और स्वीडन क्रमशः 31वें और 32वें सदस्य बने)।
- **निर्णय-निर्माण:** नाटो में निर्णय सदस्य देशों के बीच सर्वसम्मति से लिए जाते हैं। *नॉर्थ अटलांटिक काउंसिल* प्रमुख राजनीतिक निर्णय-निर्माण निकाय है।
- **मुख्यालय:** ब्रसेल्स, बेल्जियम।

स्रोत: IE

पीएम पोषण योजना

समाचार में

- संसदीय स्थायी समिति ने *पीएम पोषण योजना* में नाश्ते को शामिल करने और कवरेज को कक्षा 12 तक बढ़ाने की सिफारिश की है।

पीएम पोषण के बारे में

- पूर्व में *मिड-डे मील योजना (MDMS)* के नाम से जानी जाती थी, जिसे 2021 में *पीएम पोषण (प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण)* नाम दिया गया।
- यह शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत संचालित होती है और 2021-22 से 2025-26 की अवधि के लिए अनुमोदित है।
- यह एक *केंद्रीय प्रायोजित योजना* है (केंद्र और राज्यों द्वारा संयुक्त रूप से वित्तपोषित), जो सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 8 तक के छात्रों को एक गर्म पका हुआ भोजन प्रदान करती है।

- इसका उद्देश्य एक साथ भूख (पर्याप्त भोजन की कमी) और शैक्षिक परिणामों (उपस्थिति, स्थायित्व, अधिगम) को संबोधित करना है।

स्रोत: TH

भारत औद्योगिक विकास योजना (BHAVYA)

संदर्भ

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत औद्योगिक विकास योजना (BHAVYA) को ₹33,660 करोड़ के आवंटन के साथ अनुमोदित किया है।

परिचय

- **उद्देश्य:** 100 “भविष्य-उन्मुख” औद्योगिक पार्कों का निर्माण करना, जिन्हें पीएम गतिशक्ति कार्यक्रम से जोड़ा जाएगा ताकि वे बहु-आयामी संपर्क और अंतिम छोर तक पहुँच का लाभ उठा सकें।
 - ये पार्क औद्योगिक अवसंरचना में नए मानक स्थापित करेंगे, विश्वसनीयता सुनिश्चित करेंगे, अक्षमताओं को कम करेंगे और विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाएँगे।
- **भूमि उपयोग:** 100 से 1,000 एकड़ तक के औद्योगिक पार्कों का विकास किया जाएगा।
- **वित्तपोषण:** केंद्र सरकार प्रति एकड़ ₹1 करोड़ तक की राशि उपलब्ध कराएगी। योजना में राज्य सरकारों और निजी क्षेत्र की भागीदारी भी शामिल होगी।
- **अवसंरचना:** आंतरिक सड़कें, भूमिगत उपयोगिताएँ, जल निकासी, सामान्य उपचार सुविधाएँ, आईसीटी और प्रशासनिक प्रणालियाँ।
- **क्रियान्वयन:** राष्ट्रीय औद्योगिक कॉरिडोर विकास निगम (NICDC), जो उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के अंतर्गत आता है, प्रमुख भूमिका निभाएगा।
- योजना की अवधि 2026-27 से शुरू होकर छह वर्ष होगी।
 - प्रथम चरण में 50 पार्क स्थापित किए जाएँगे।

स्रोत: TH

मीथेन उत्सर्जन हॉटस्पॉट

संदर्भ

- स्टॉप मीथेन प्रोजेक्ट (UCLA) द्वारा किए गए हालिया उपग्रह-आधारित शोध से पता चला है कि तेल और गैस स्थलों की एक छोटी संख्या असमान रूप से उच्च मीथेन उत्सर्जन के लिए उत्तरदायी है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

- विश्वभर में हजारों तेल और गैस स्थलों पर 4,000+ मीथेन प्लूम का पता चला।
 - शीर्ष 25 स्थल सबसे अधिक तीव्र प्रति घंटा उत्सर्जन दर के लिए जिम्मेदार हैं, जो 3.7 से 10.5 मीट्रिक टन प्रति घंटा तक है।
- तुर्कमेनिस्तान सूची में प्रमुख है, जहाँ दो-तिहाई से अधिक सबसे खराब उत्सर्जक स्थल हैं। अन्य प्रमुख क्षेत्र: ईरान, वेनेज़ुएला, टेक्सास (USA) और सिंध (पाकिस्तान)।

मीथेन के बारे में

- मीथेन (CH₄) एक रंगहीन, गंधहीन और अत्यधिक ज्वलनशील गैस है, जो प्राकृतिक गैस का मुख्य घटक है।
 - इसका वायुमंडलीय जीवनकाल लगभग 12 वर्ष है, जो कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में कम है।
- **ग्रीनहाउस गैस के रूप में:** मीथेन एक अत्यधिक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, जिसका अल्पकालिक ऊष्मा प्रभाव बहुत अधिक है।
 - यह 20 वर्षों की अवधि में कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में 80 गुना अधिक प्रभावी है।
 - औद्योगिक युग से पूर्व की तुलना में वर्तमान वैश्विक ऊष्मीकरण का लगभग 30% मीथेन के कारण है।
- **मुख्य स्रोत:**
 - **मानवजनित उत्सर्जन:** तेल और गैस उत्पादन, कोयला खनन, पशुधन का आंतरिक किण्वन (डकार), और लैंडफिल में अपशिष्ट का विघटन।
 - **प्राकृतिक स्रोत:** आर्द्रभूमि, समुद्री अवसाद और हाइड्रेट्स, तथा ज्वालामुखी जैसे भूवैज्ञानिक स्रोत।

स्रोत: DTE

प्राचीन पर्वत श्रृंखला

समाचार में

- सर्वोच्च न्यायालय (SC) की केंद्रीय सशक्त समिति ने राजस्थान की अरावली पर्वत श्रृंखला में खनन क्षेत्रों का मानचित्रण करने का कार्य वन सर्वेक्षण ऑफ इंडिया (FSI) को सौंपा है।

प्राचीन पर्वत श्रृंखला की परिभाषा

- एक प्राचीन पर्वत श्रृंखला (भूवैज्ञानिक रूप से प्राचीन, अत्यधिक अपक्षयित पर्वत प्रणाली) जैसे अरावली को केवल ऊँचाई जैसे एकल मापदंड से परिभाषित नहीं किया जा सकता।
- इसकी परिभाषा में भू-आकृति विज्ञान (भूमि रूपों का अध्ययन), ढाल, भूवैज्ञानिक निरंतरता और पारिस्थितिक विस्तार को शामिल करना चाहिए, ताकि भौतिक स्वरूप एवं पर्यावरणीय कार्य दोनों को समाहित किया जा सके।

वर्तमान दृष्टिकोण में चिंताएँ

- समिति का 100 मीटर ऊँचाई मानदंड मनमाना और संकीर्ण माना गया है, जो प्राचीन श्रृंखलाओं की खंडित एवं अपक्षयित प्रकृति को ध्यान में नहीं रखता।
 - यह सीमा पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण निम्न-स्तरीय क्षेत्रों को बाहर कर सकती है, जिससे शोषण का खतरा बढ़ेगा।
- इसके विपरीत, 2011 का FSI मानचित्रण दूरसंवेदी तकनीक, GIS और डिजिटाइज्ड कंटूर डेटा का उपयोग कर वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित विकल्प प्रदान करता है।
 - यह 3-डिग्री ढाल मानदंड का उपयोग करता है, जो केवल ऊँचाई की तुलना में भू-आकृति विज्ञान को अधिक सटीक रूप से दर्शाता है।
- समिति का ढाँचा केवल 37 जिलों को मान्यता देता है, जबकि FSI द्वारा पहले पहचाने गए 62 जिलों में से 25 को बाहर कर देता है, जिससे क्षेत्रीय और वैज्ञानिक संगति प्रभावित होती है।

निहितार्थ

- राजस्थान में केवल ~8% वन और वृक्ष आवरण है, जो मुख्यतः अरावली क्षेत्र में केंद्रित है।
- गलत वर्गीकरण से कानूनी संरक्षण की हानि हो सकती है, जिससे खनन, वनों की कटाई और भूजल क्षरण तीव्र

होगा और पहले से ही संवेदनशील पारिस्थितिक संतुलन खराब हो जाएगा।

क्या आप जानते हैं?

- वन सर्वेक्षण ऑफ इंडिया (FSI) (स्थापना: 1981), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अंतर्गत भारत का प्रमुख राष्ट्रीय निकाय है, जो वन संसाधनों की निगरानी करता है।
- इसका मुख्य दायित्व द्विवार्षिक स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट प्रकाशित करना है, ताकि आवरण परिवर्तनों का आकलन किया जा सके और वन एवं गैर-वन क्षेत्रों में वृक्ष संसाधनों की व्यापक सूची बनाए रखी जा सके।

स्रोत: TH

जापानी चुम सैल्मन

संदर्भ

- शोधकर्ताओं ने पाया है कि विगत 25 वर्षों में चुम सैल्मन के लिए उपयुक्त समुद्री आवासों में उल्लेखनीय बदलाव हुआ है।
- समुद्री ऊष्मीकरण, जूप्लवक (zooplankton) की कमी — जो एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत हैं — और बार-बार होने वाली समुद्री ऊष्मा तरंगों के कारण उपयुक्त आवासों में समग्र रूप से गिरावट आई है।

जापानी चुम सैल्मन के बारे में

- जापान में इसे "शिरोजाके" या सैल्मन कहा जाता है।
- इसके शरीर पर हल्की ऊर्ध्वाधर धारियाँ और चाँदी जैसी चमकदार पार्श्व सतह होती है।
- चुम सैल्मन पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र के लोगों तथा अलास्का और ब्रिटिश कोलंबिया के मूल निवासियों के लिए एक प्रमुख आहार है।
- वर्तमान में जापान में उपभोग किए जाने वाले अधिकांश सैल्मन चिली और नॉर्वे जैसे देशों से आयात किए जाते हैं।
 - किंतु मात्र दो दशक पहले जापानी चुम सैल्मन घरेलू सैल्मन उपभोग का बड़ा हिस्सा हुआ करता था।



स्रोत: DTE